Dr. Chiranjeev Kumar Thakur
Assistant Professor GT
Department of Sociology
VSJ College Rajnagar

BA Part I (H)
Paper I

सामाजिक मूल्य (social values) ⇒ सामाजिक मूल्यों को एक ऐसे पैमाने या मानक के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसके आधार पर हम किसी व्यवहार, वस्तु, भावना, लक्ष्य एवं साधन को उचित एवं अनुचित अच्छी या बुरी तथा सही या गलत ठहराते हैं।

राधाकमल मुकर्जी के अनुसार, "मूल्य समाज द्वारा मान्यता प्राप्त इच्छाएं तथा लक्ष्य हैं जिनका आन्तरीकरण सीखने या समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से होता है और जो प्राकृतिक अधिमान्यताएं मानक तथा अभिलाषाएं बन जाते हैं।

जानसन के अनुसार, "मूल्यों को एक धारणा या मानक के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो सांस्कृतिक हो सकता है या केवल व्यक्तिगत और जिसके द्वारा वस्तुओं की एक साथ तुलना की जाती है और वे एक दूसरे के सन्दर्भ में स्वीकार या अस्वीकार की जाती है, वांछित या अवांछित, अच्छी या बुरी, अधिक या कम उचित मानी जाती है।

सामाजिक मूल्यों की विशेषताएँ ⇒

(1) सामाजिक मूल्य सामूहिक होते हैं - सामाजिक मूल्यों का सम्बन्ध किसी व्यक्ति विशेष से नहीं होता है, वरन् ये पूरे समूह एवं समाज की धरोहर होते हैं और इन्हें पूरे समूह की मान्यता प्राप्त होती है।

(2) सामाजिक मूल्य सामाजिक मानक हैं - मानक का तात्पर्य है जिनके द्वारा हम किसी वस्तु को मापते हैं। सामाजिक मूल्य भी मानक हैं जिनके द्वारा हम किसी वस्तु, व्यवहार, लक्ष्य, साधन, गुण आदि को अच्छा या बुरा ठहराते हैं।

(3) सामाजिक मूल्यों के बारे में समूह में एकमतता पायी जाती है - समूह एवं समाज के सभी लोगों में सामाजिक मूल्यों के बारे में एकमतता पायी जाती है। वे सभी इन्हें स्वीकार करते हैं और मान्यता प्रदान करते हैं।

(4) सामाजिक मूल्यों के पीछे भावनाएं होती हैं - सामाजिक मूल्यों के साथ लोगों की भावनाएं जुड़ी होती हैं। यही कारण है कि वे व्यक्तिगत हितों को तिलांजलि देकर भी इनकी रक्षा करते हैं।

(5) सामाजिक मूल्य गतिशील होते हैं - सामाजिक मूल्य सदैव ही एक समान नहीं होते। समय एवं परिस्थितियों के साथ इनमें परिवर्तन आता रहता है।

(6) सामाजिक मूल्यों में भिन्नता पायी जाती है।

(7) सामाजिक मूल्य सामाजिक संगठन एवं सामाजिक आवश्यकताओं के लिए महत्वपूर्ण समझे जाते हैं।